

राष्ट्रीय सुरक्षा नीति और भारत

डा० आभा पाण्डेय¹

¹राजनीति विज्ञान विभाग, डी०जी० कालेज कानपुर, उ०प्र०

Received: 20 Dec 2025 Accepted & Reviewed: 25 Dec 2025, Published: 31 Dec 2025

Abstract

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही निरंतर परिवर्तनशील रही है। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ भारत के समक्ष सीमाई सुरक्षा, विभाजनजनित हिंसा, शरणार्थी संकट, आर्थिक कमजोरी तथा संस्थागत पुनर्गठन जैसी अनेक चुनौतियाँ उपस्थित थीं। समय के साथ भारत की सुरक्षा अवधारणा केवल पारंपरिक सैन्य सुरक्षा तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें आर्थिक सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा, जैविक सुरक्षा तथा मानव सुरक्षा जैसे आयाम भी जुड़ते गए। प्रस्तुत शोधपत्र में 1947 से 2023 तक भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के विकास, स्वरूप, चुनौतियों और उपलब्धियों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत की सुरक्षा नीति पर अंतरराष्ट्रीय राजनीति, शीत युद्ध, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, चीन एवं पाकिस्तान के साथ संबंध, आतंकवाद, परमाणु नीति, वैश्वीकरण तथा तकनीकी परिवर्तन का गहरा प्रभाव पड़ा है। 1962 का चीन युद्ध, 1965 एवं 1971 के भारत-पाक युद्ध, 1998 के परमाणु परीक्षण, कारगिल युद्ध, 26/11 मुंबई आतंकवादी हमला, सर्जिकल स्ट्राइक तथा आधुनिक साइबर चुनौतियाँ भारत की सुरक्षा नीति के निर्णायक पड़ाव सिद्ध हुए। वर्तमान समय में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति बहुआयामी एवं समग्र स्वरूप ग्रहण कर चुकी है, जिसमें सैन्य शक्ति के साथ-साथ कूटनीति, आर्थिक सामर्थ्य, तकनीकी आत्मनिर्भरता, अंतरिक्ष शक्ति, समुद्री प्रभुत्व और आंतरिक स्थिरता को भी समान महत्व दिया जा रहा है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि भारत ने "रणनीतिक स्वायत्तता" को बनाए रखते हुए वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका को सशक्त किया है। यह शोधपत्र राष्ट्रीय सुरक्षा के समकालीन आयामों जैसे आतंकवाद, उग्रवाद, सीमा विवाद, साइबर हमले, ड्रोन युद्ध, जैविक संकट तथा समुद्री सुरक्षा का विश्लेषण करते हुए भविष्य के लिए नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत करता है। निष्कर्षतः भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का विकास एक निरंतर गतिशील प्रक्रिया रही है, जिसने बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को अनुकूलित किया है।

प्रमुख शब्द— राष्ट्रीय सुरक्षा, भारत की सुरक्षा नीति, आंतरिक सुरक्षा, बाह्य सुरक्षा, आतंकवाद, परमाणु नीति, रणनीतिक स्वायत्तता, साइबर सुरक्षा, सीमा सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति

Introduction

राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता, अखंडता, राजनीतिक स्थिरता तथा नागरिकों की सुरक्षा से जुड़ी एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है। आधुनिक युग में राष्ट्रीय सुरक्षा का स्वरूप केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, सांस्कृतिक, ऊर्जा, पर्यावरणीय तथा साइबर सुरक्षा जैसे अनेक आयाम सम्मिलित हो गए हैं। वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति, आतंकवाद, साइबर युद्ध, जैविक खतरों तथा अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन में परिवर्तन ने राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा को अधिक

जटिल और व्यापक बना दिया है। भारत जैसे विशाल, लोकतांत्रिक तथा बहुसांस्कृतिक राष्ट्र के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। भारत की भौगोलिक स्थिति, विस्तृत सीमाएँ, विविध सामाजिक संरचना तथा पड़ोसी देशों के साथ जटिल संबंध इसकी सुरक्षा चुनौतियों को और अधिक संवेदनशील बनाते हैं। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत के समक्ष विभाजनजनित हिंसा, शरणार्थी समस्या, जम्मू-कश्मीर विवाद, सीमाई असुरक्षा तथा आर्थिक कमजोरी जैसी गंभीर चुनौतियाँ उपस्थित थीं। इन परिस्थितियों में नवस्वतंत्र भारत को ऐसी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की आवश्यकता थी जो राष्ट्र की अखंडता और स्थिरता को बनाए रखते हुए विकास और लोकतंत्र की रक्षा कर सके।

स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में भारत की सुरक्षा नीति आदर्शवाद, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व तथा गुटनिरपेक्षता के सिद्धांतों पर आधारित रही। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने पंचशील सिद्धांतों तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को प्राथमिकता देते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि विश्व शांति के माध्यम से भारत अपनी सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है। किन्तु 1962 के भारत-चीन युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल आदर्शवादी दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सैन्य शक्ति तथा रणनीतिक तैयारी भी आवश्यक है। इसके पश्चात भारत की सुरक्षा नीति में व्यापक परिवर्तन आरंभ हुए और रक्षा सुदृढीकरण, सैन्य आधुनिकीकरण तथा सामरिक तैयारी पर विशेष बल दिया गया। 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्धों ने भारत की सुरक्षा नीति को और अधिक यथार्थवादी बनाया। विशेष रूप से 1971 में बांग्लादेश के निर्माण के बाद भारत दक्षिण एशिया में एक प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उभरा। इसके साथ ही परमाणु नीति भी राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार बनकर सामने आई। 1974 और 1998 के परमाणु परीक्षणों ने भारत को विश्व की परमाणु शक्तियों की श्रेणी में स्थापित किया और राष्ट्रीय सुरक्षा नीति को एक नया सामरिक आयाम प्रदान किया। शीत युद्ध की समाप्ति और वैश्वीकरण के दौर में भारत की सुरक्षा चुनौतियों का स्वरूप भी बदलता गया। सीमापार आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद, धार्मिक कट्टरता, संगठित अपराध तथा साइबर हमले नई चुनौतियों के रूप में उभरे। 2001 के संसद हमले, 2008 के मुंबई आतंकवादी हमले तथा पुलवामा जैसी घटनाओं ने भारत को आतंकवाद के विरुद्ध कठोर और सक्रिय नीति अपनाने के लिए प्रेरित किया। सर्जिकल स्ट्राइक तथा बालाकोट एयर स्ट्राइक भारत की बदलती सुरक्षा नीति के उदाहरण हैं, जिनसे यह स्पष्ट हुआ कि भारत अब अपनी सुरक्षा के प्रति अधिक आक्रामक और निर्णायक दृष्टिकोण अपना रहा है।

21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा और अधिक व्यापक हो गई है। साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा तथा जैविक सुरक्षा आज भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के अभिन्न अंग बन चुके हैं। हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा, चीन की विस्तारवादी नीति, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र का महत्व तथा वैश्विक शक्ति-संतुलन में परिवर्तन ने भारत को अपनी सुरक्षा रणनीति का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया है। इसी क्रम में भारत ने "आत्मनिर्भर भारत", "मेक इन इंडिया", रक्षा उत्पादन में स्वदेशीकरण तथा आधुनिक तकनीकी विकास पर बल दिया है। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष आंतरिक सुरक्षा भी है। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद, उत्तर-पूर्व में उग्रवाद तथा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में हिंसा लंबे समय तक राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बने रहे हैं। सरकार ने विकास, राजनीतिक संवाद तथा सुरक्षा अभियानों के माध्यम से इन समस्याओं के समाधान का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त कोविड-19 महामारी ने यह स्पष्ट किया कि स्वास्थ्य सुरक्षा और आपदा प्रबंधन भी राष्ट्रीय

सुरक्षा के महत्वपूर्ण आयाम हैं। वर्तमान समय में भारत विश्व राजनीति में एक उभरती हुई शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को सुदृढ़ कर रहा है। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति अब केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भारत के रणनीतिक हितों, आर्थिक विकास, तकनीकी आत्मनिर्भरता तथा अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को भी सुरक्षित करने का प्रयास करती है। QUAD, BRICS, SCO तथा G20 जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी यह दर्शाती है कि भारत अपनी सुरक्षा नीति को वैश्विक कूटनीतिक रणनीति के साथ जोड़कर देख रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र "राष्ट्रीय सुरक्षा नीति और भारत" का उद्देश्य स्वतंत्रता के बाद से भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के विकास, स्वरूप, चुनौतियों तथा उपलब्धियों का समग्र अध्ययन करना है। इसमें भारत की सुरक्षा नीति के विभिन्न चरणों, युद्धों, परमाणु नीति, आतंकवाद-रोधी रणनीतियों, साइबर एवं समुद्री सुरक्षा, आंतरिक सुरक्षा तथा समकालीन चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह अध्ययन भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों के संदर्भ में भारत की नीति-निर्माण प्रक्रिया का मूल्यांकन करते हुए आवश्यक नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा किसी राष्ट्र की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता, राजनीतिक स्वतंत्रता तथा नागरिकों की सुरक्षा से संबंधित व्यापक विचार है। पारंपरिक रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा को सैन्य शक्ति और युद्ध की तैयारी तक सीमित माना जाता था, किन्तु आधुनिक समय में इसका स्वरूप अत्यंत व्यापक हो गया है। आज राष्ट्रीय सुरक्षा में केवल सीमाओं की रक्षा ही नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिरता, राजनीतिक व्यवस्था, सामाजिक एकता, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति, ऊर्जा संसाधनों की उपलब्धता, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, पर्यावरणीय संतुलन तथा मानव सुरक्षा जैसे अनेक तत्व सम्मिलित हो गए हैं। किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा उसकी सैन्य क्षमता के साथ-साथ उसकी आर्थिक शक्ति, तकनीकी विकास, कूटनीतिक प्रभाव तथा सामाजिक एकता पर भी निर्भर करती है। आधुनिक वैश्विक व्यवस्था में आतंकवाद, साइबर अपराध, जैविक खतरे, जलवायु परिवर्तन, समुद्री प्रतिस्पर्धा तथा अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संघर्ष ने राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा को और अधिक जटिल बना दिया है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण राष्ट्र के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा केवल बाहरी आक्रमणों से रक्षा का विषय नहीं है, बल्कि आंतरिक स्थिरता, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा तथा विकास प्रक्रिया की निरंतरता से भी जुड़ी हुई है। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के समक्ष अनेक गंभीर सुरक्षा चुनौतियाँ उपस्थित थीं। देश का विभाजन, सांप्रदायिक हिंसा, शरणार्थी संकट, सीमाई असुरक्षा तथा जम्मू-कश्मीर का प्रश्न तत्कालीन भारत की प्रमुख समस्याएँ थीं। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्रीतसंस छमीतन ने राष्ट्रीय सुरक्षा नीति को आदर्शवाद, गुटनिरपेक्षता और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित किया। भारत ने शीत युद्ध के समय किसी भी शक्ति गुट में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई। पंचशील सिद्धांतों तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को महत्व देते हुए भारत ने विश्व शांति का समर्थन किया। उस समय यह माना गया कि भारत की सुरक्षा सैन्य शक्ति की अपेक्षा नैतिक नेतृत्व, कूटनीतिक संतुलन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से अधिक सुनिश्चित हो सकती है। स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में भारत की आर्थिक स्थिति कमजोर थी, जिसके कारण रक्षा क्षेत्र पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया। सेना का पुनर्गठन तो हुआ, किन्तु सैन्य आधुनिकीकरण की गति सीमित रही। भारत ने विकास योजनाओं, औद्योगीकरण तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं के निर्माण को प्राथमिकता दी। इस अवधि में पाकिस्तान के साथ 1947-48 का युद्ध भारत की सुरक्षा नीति की पहली बड़ी परीक्षा थी। जम्मू-कश्मीर पर संघर्ष ने यह स्पष्ट

कर दिया कि भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए संगठित सैन्य शक्ति की आवश्यकता है। इसके बावजूद भारत की नीति में आदर्शवाद और शांति की भावना प्रमुख बनी रही।

1950 के दशक में चीन के साथ भारत के संबंध मैत्रीपूर्ण दिखाई देते थे। “हिंदी-चीनी भाई-भाई” का नारा और पंचशील समझौता इस मैत्री का प्रतीक थे। किन्तु धीरे-धीरे चीन की विस्तारवादी नीति स्पष्ट होने लगी। तिब्बत पर चीन के नियंत्रण और सीमा विवादों ने भारत की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाया। इसके बावजूद भारतीय नेतृत्व ने लंबे समय तक यह विश्वास बनाए रखा कि चीन के साथ संघर्ष की संभावना कम है। यही कारण था कि सीमाई क्षेत्रों में सैन्य तैयारी पर्याप्त नहीं थी। 1962 का भारत-चीन युद्ध भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। इस युद्ध ने भारतीय सुरक्षा व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर कर दिया। भारतीय सेना पर्याप्त संसाधनों, आधुनिक हथियारों तथा रणनीतिक तैयारी के अभाव में संघर्ष कर रही थी। चीन के साथ युद्ध में मिली पराजय ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल आदर्शवादी कूटनीति और नैतिक सिद्धांतों के आधार पर राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती। इस घटना के बाद भारत ने अपनी सुरक्षा नीति का पुनर्मूल्यांकन किया और यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया। 1962 के युद्ध के बाद भारत ने रक्षा क्षेत्र में व्यापक सुधार आरंभ किए। रक्षा बजट में उल्लेखनीय वृद्धि की गई, सेना का विस्तार किया गया तथा आधुनिक हथियारों की खरीद पर बल दिया गया। सीमाई सड़कों और सैन्य अवसंरचना का विकास प्रारंभ हुआ। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन को सुदृढ़ किया गया तथा सैन्य प्रशिक्षण को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया गया। इस युद्ध ने भारत को यह समझाया कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए मजबूत सैन्य शक्ति और रणनीतिक तैयारी अत्यंत आवश्यक है। इसी काल से भारत ने दीर्घकालिक रक्षा नीति और सामरिक सोच को अधिक गंभीरता से अपनाना प्रारंभ किया।

1965 और 1971 के भारत-पाक युद्धों ने भारत की सुरक्षा नीति को और अधिक सुदृढ़ तथा यथार्थवादी बनाया। 1965 का युद्ध पाकिस्तान की आक्रामक नीति का परिणाम था। इस युद्ध ने भारत को यह अनुभव कराया कि पाकिस्तान निरंतर छद्म युद्ध और सीमाई संघर्षों की रणनीति अपनाएगा। भारत ने इस युद्ध के बाद सैन्य आधुनिकीकरण तथा रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता पर विशेष बल दिया। 1971 का युद्ध भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की सबसे बड़ी सफलताओं में से एक माना जाता है। पूर्वी पाकिस्तान में राजनीतिक दमन और मानवाधिकार संकट के कारण लाखों शरणार्थी भारत आए, जिससे भारत की आंतरिक सुरक्षा और आर्थिक स्थिति पर गंभीर प्रभाव पड़ा। भारत ने मानवीय और सामरिक दोनों दृष्टियों से हस्तक्षेप किया। युद्ध में भारत की निर्णायक विजय हुई और बांग्लादेश का निर्माण हुआ। इस युद्ध ने दक्षिण एशिया में भारत की स्थिति को अत्यंत मजबूत किया तथा यह सिद्ध कर दिया कि भारत आवश्यकता पड़ने पर निर्णायक सैन्य कार्रवाई करने में सक्षम है। 1971 के बाद भारत की सुरक्षा नीति में सामरिक आत्मविश्वास बढ़ा। भारत ने यह स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय हितों की रक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस काल में भारत ने रक्षा उत्पादन, सैन्य संगठन तथा अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। सोवियत संघ के साथ मैत्री संधि ने भी भारत को सामरिक समर्थन प्रदान किया। भारत की परमाणु नीति राष्ट्रीय सुरक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार रही है। चीन के 1964 के परमाणु परीक्षण और पाकिस्तान की बढ़ती सामरिक महत्वाकांक्षाओं ने भारत को परमाणु क्षमता विकसित करने के लिए प्रेरित किया। 1974 में भारत ने राजस्थान के पोखरण में अपना पहला परमाणु परीक्षण किया, जिसे “स्माइलिंग बुद्धा” कहा गया।

भारत ने इसे शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट बताया, किन्तु इस परीक्षण ने विश्व को यह संकेत दिया कि भारत परमाणु तकनीक में सक्षम हो चुका है।

1998 में पोखरण-८ परमाणु परीक्षणों ने भारत को औपचारिक रूप से परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित कर दिया। भारत ने परमाणु नीति के अंतर्गत "विश्वसनीय न्यूनतम प्रतिरोध" तथा "नो फर्स्ट यूज" सिद्धांत को अपनाया। भारत की परमाणु नीति का उद्देश्य आक्रामक विस्तारवाद नहीं, बल्कि प्रतिरोध क्षमता विकसित करना था ताकि कोई भी राष्ट्र भारत के विरुद्ध परमाणु धमकी देने का साहस न कर सके। भारत की परमाणु नीति ने राष्ट्रीय सुरक्षा को एक नया सामरिक आयाम प्रदान किया। इससे भारत को चीन और पाकिस्तान के विरुद्ध रणनीतिक संतुलन प्राप्त हुआ। परमाणु क्षमता ने भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति को भी मजबूत किया तथा उसे वैश्विक शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। भारत ने सदैव परमाणु निरस्त्रीकरण का समर्थन किया है और जिम्मेदार परमाणु शक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाई है। समग्र रूप से देखा जाए तो स्वतंत्रता के बाद भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति ने आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर लंबी यात्रा तय की है। प्रारंभिक वर्षों में जहां शांति, गुटनिरपेक्षता और नैतिक कूटनीति पर बल दिया गया, वहीं 1962 के बाद सैन्य शक्ति, रणनीतिक तैयारी और सामरिक आत्मनिर्भरता को अधिक महत्व मिलने लगा। भारत-पाक युद्धों तथा परमाणु नीति ने भारत की सुरक्षा सोच को और अधिक परिपक्व तथा व्यापक बनाया। आज भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है, जिसमें सैन्य शक्ति के साथ-साथ आर्थिक विकास, तकनीकी आत्मनिर्भरता, साइबर सुरक्षा तथा वैश्विक कूटनीतिक संतुलन को भी समान महत्व दिया जा रहा है।

1999 का कारगिल युद्ध भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी। पाकिस्तान समर्थित सैनिकों और घुसपैठियों ने जम्मू-कश्मीर के कारगिल क्षेत्र की ऊँची पहाड़ियों पर कब्जा कर लिया था, जिसका उद्देश्य श्रीनगर-लेह मार्ग को बाधित करना तथा भारत पर सामरिक दबाव बनाना था। प्रारंभिक चरण में भारतीय खुफिया तंत्र इस घुसपैठ का सही आकलन नहीं कर पाया, जिससे सुरक्षा व्यवस्था की कमजोरियाँ उजागर हुईं। भारतीय सेना ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में "ऑपरेशन विजय" चलाकर दुश्मन को पीछे हटने पर मजबूर किया। इस युद्ध ने भारतीय सेना के साहस, समर्पण और सामरिक क्षमता को विश्व के सामने स्थापित किया। कारगिल युद्ध के बाद भारत ने राष्ट्रीय सुरक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किए। कारगिल समीक्षा समिति का गठन किया गया, जिसने खुफिया तंत्र, सैन्य समन्वय तथा सीमाई निगरानी में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। इसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की भूमिका को अधिक प्रभावी बनाया गया तथा रक्षा खुफिया एजेंसी जैसी संस्थाओं का गठन हुआ। सीमाओं पर निगरानी के लिए आधुनिक तकनीक, उपग्रह प्रणाली और ड्रोन तकनीक का उपयोग बढ़ाया गया। भारत ने यह समझ लिया कि भविष्य के युद्ध केवल पारंपरिक सैन्य संघर्ष तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि उनमें सूचना युद्ध, साइबर हमले तथा छद्म युद्ध की रणनीतियाँ भी सम्मिलित होंगी। 21वीं सदी में आतंकवाद भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक बनकर उभरा। विशेष रूप से पाकिस्तान समर्थित सीमा-पार आतंकवाद ने भारत की सुरक्षा व्यवस्था को निरंतर प्रभावित किया। 2001 का भारतीय संसद पर हमला, 2008 का मुंबई आतंकवादी हमला, पठानकोट हमला, उरी हमला तथा पुलवामा हमला ऐसी घटनाएँ थीं जिन्होंने भारत की सुरक्षा नीति को अधिक कठोर और सक्रिय बनाया। भारत ने आतंकवाद

के प्रति "जीरो टॉलरेंस" की नीति अपनाई और यह स्पष्ट किया कि आतंकवाद तथा वार्ता साथ-साथ नहीं चल सकते।

मुंबई हमले के बाद भारत ने राष्ट्रीय जांच एजेंसी की स्थापना की, ताकि आतंकवादी गतिविधियों की प्रभावी जाँच और समन्वय सुनिश्चित किया जा सके। सुरक्षा एजेंसियों के बीच सूचना साझा करने की व्यवस्था को मजबूत किया गया तथा तटीय सुरक्षा को सुदृढ़ किया गया। उरी हमले के बाद भारत द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक और पुलवामा हमले के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक यह दर्शाती हैं कि भारत अब केवल रक्षात्मक नीति तक सीमित नहीं है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर सक्रिय सैन्य कार्रवाई करने के लिए भी तैयार है। भारत की आंतरिक सुरक्षा चुनौतियाँ भी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण भाग रही हैं। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद और अलगाववाद, उत्तर-पूर्व भारत में उग्रवादी आंदोलन तथा मध्य भारत में नक्सलवाद लंबे समय तक गंभीर समस्याएँ बने रहे। जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद ने न केवल सीमाई सुरक्षा बल्कि सामाजिक और राजनीतिक स्थिरता को भी प्रभावित किया। सरकार ने सुरक्षा अभियानों, राजनीतिक संवाद और विकास योजनाओं के माध्यम से स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया। उत्तर-पूर्व भारत में असम, नागालैंड, मणिपुर और त्रिपुरा जैसे राज्यों में अलगाववादी आंदोलनों ने राष्ट्रीय एकता के लिए चुनौती उत्पन्न की। भारत सरकार ने सैन्य कार्रवाई के साथ-साथ शांति समझौतों और विकास कार्यक्रमों के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया। नक्सलवाद, जिसे "देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा" कहा गया, आर्थिक और सामाजिक असमानता से जुड़ा हुआ था। सरकार ने सुरक्षा बलों की तैनाती के साथ-साथ शिक्षा, सड़क, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी विकास योजनाओं को बढ़ावा देकर इस समस्या को नियंत्रित करने का प्रयास किया। डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम बन चुकी है। सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग ने साइबर हमलों, डेटा चोरी, हैकिंग, ऑनलाइन जासूसी और डिजिटल आतंकवाद जैसी नई चुनौतियों को जन्म दिया है। आधुनिक युद्ध में साइबर हमले किसी देश की बैंकिंग प्रणाली, ऊर्जा संरचना, संचार व्यवस्था, रक्षा नेटवर्क और सरकारी संस्थाओं को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं। भारत ने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए साइबर सुरक्षा नीति तैयार की तथा भारतीय कंप्यूटर आपात प्रतिक्रिया दल जैसी संस्थाओं को सुदृढ़ किया।

साइबर सुरक्षा के साथ-साथ आधुनिक तकनीकी चुनौतियाँ भी राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन तकनीक, क्वांटम कंप्यूटिंग, 5G और 6G संचार प्रणाली तथा सोशल मीडिया आधारित सूचना युद्ध आज सुरक्षा नीति के नए आयाम बन चुके हैं। ड्रोन के माध्यम से हथियारों और मदक पदार्थों की तस्करी, साइबर जासूसी तथा फेक न्यूज के माध्यम से सामाजिक अशांति फैलाने जैसी घटनाएँ भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। भारत की समुद्री सुरक्षा भी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। भारत की लगभग 7500 किलोमीटर लंबी समुद्री सीमा तथा हिंद महासागर में उसकी रणनीतिक स्थिति उसे वैश्विक व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बनाती है। भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार समुद्री मार्गों से होता है, इसलिए समुद्री सुरक्षा राष्ट्रीय आर्थिक सुरक्षा से भी जुड़ी हुई है। हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती गतिविधियों और "स्ट्रिंग ऑफ पलर्स" नीति ने भारत की सामरिक चिंताओं को बढ़ाया है। भारत ने समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने के लिए अपनी नौसेना का आधुनिकीकरण किया तथा "ब्लू वॉटर नेवी" की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। अंडमान और निकोबार

कमांड की स्थापना, समुद्री निगरानी प्रणाली, तटीय सुरक्षा नेटवर्क तथा इंडो-पैसिफिक रणनीति भारत की समुद्री सुरक्षा नीति के प्रमुख अंग हैं। भारत ने अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ QUAD जैसे मंचों पर सहयोग बढ़ाकर हिंद महासागर क्षेत्र में सामरिक संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है। अंतरिक्ष सुरक्षा आधुनिक राष्ट्रीय सुरक्षा का उभरता हुआ क्षेत्र है। संचार, मौसम पूर्वानुमान, सैन्य निगरानी, मिसाइल प्रणाली तथा खुफिया जानकारी के लिए उपग्रहों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने भारत को अंतरिक्ष शक्ति के रूप में स्थापित किया है। उपग्रह आधारित निगरानी और रक्षा प्रणाली ने भारत की सामरिक क्षमता को मजबूत किया है। 2019 में भारत द्वारा "मिशन शक्ति" के अंतर्गत एंटी-सैटेलाइट मिसाइल परीक्षण ने यह सिद्ध किया कि भारत अंतरिक्ष सुरक्षा के क्षेत्र में भी सक्षम शक्ति बन चुका है।

तकनीकी आत्मनिर्भरता भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण आधार बन गई है। लंबे समय तक भारत रक्षा उपकरणों के लिए विदेशी देशों पर निर्भर रहा, किन्तु हाल के वर्षों में "आत्मनिर्भर भारत" और "मेक इन इंडिया" जैसी पहलों के माध्यम से स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा दिया गया है। स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस, ब्रह्मोस मिसाइल, आकाश मिसाइल प्रणाली तथा स्वदेशी विमानवाहक पोत विक्रांत इस दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। तकनीकी आत्मनिर्भरता न केवल आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक स्वतंत्रता को भी सुदृढ़ करती है। भारत ने राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न संस्थागत ढाँचे विकसित किए हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के समन्वय और रणनीतिक निर्णयों का प्रमुख मंच है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार प्रधानमंत्री को सुरक्षा संबंधी सलाह प्रदान करते हैं तथा विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के बीच समन्वय स्थापित करते हैं। राष्ट्रीय जांच एजेंसी, रक्षा खुफिया एजेंसी, रिसर्च एंड एनालिसिस विंग, इंटेलिजेंस ब्यूरो तथा राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन जैसी संस्थाएँ भारत की सुरक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण भाग हैं। हाल के वर्षों में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का पद सृजित किया गया, जिसका उद्देश्य तीनों सेनाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना और संयुक्त सैन्य रणनीति को मजबूत करना है। थिएटर कमांड की दिशा में किए जा रहे प्रयास भी भारत की रक्षा प्रणाली को अधिक आधुनिक और प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो कारगिल युद्ध के बाद से भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में व्यापक परिवर्तन आए हैं। आतंकवाद, आंतरिक अस्थिरता, साइबर खतरे, समुद्री प्रतिस्पर्धा तथा अंतरिक्ष सुरक्षा जैसी चुनौतियों ने भारत को बहुआयामी सुरक्षा ढाँचा विकसित करने के लिए प्रेरित किया है। आज भारत की सुरक्षा नीति केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह तकनीकी आत्मनिर्भरता, आर्थिक शक्ति, समुद्री प्रभुत्व, साइबर क्षमता और वैश्विक सामरिक संतुलन को भी समान महत्व देती है।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति परस्पर गहराई से जुड़ी हुई हैं। किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य उसके राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करना होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और सामरिक स्वायत्तता के सिद्धांतों पर आधारित किया। भारत ने शीत युद्ध के दौरान अमेरिका और सोवियत संघ जैसे शक्ति गुटों से दूरी बनाए रखते हुए स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई। इसका उद्देश्य यह था कि भारत किसी भी महाशक्ति के प्रभाव में आए बिना अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप निर्णय ले सके। भारत की विदेश नीति का प्रारंभिक स्वरूप आदर्शवादी था, जिसमें विश्व शांति, उपनिवेशवाद-विरोध और

अंतरराष्ट्रीय सहयोग को विशेष महत्व दिया गया। पंचशील सिद्धांत तथा गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत की सक्रिय भूमिका इसी नीति का परिणाम थी। किन्तु समय के साथ बदलती वैश्विक परिस्थितियों ने भारत की विदेश नीति को अधिक यथार्थवादी और रणनीतिक बना दिया। चीन के साथ 1962 का युद्ध तथा पाकिस्तान के साथ लगातार संघर्षों ने भारत को यह समझाया कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए केवल नैतिक आदर्श पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि सामरिक शक्ति और प्रभावी कूटनीति भी आवश्यक है।

1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान सोवियत संघ के साथ भारत की मैत्री संधि ने यह स्पष्ट किया कि विदेश नीति और सुरक्षा नीति एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। शीत युद्ध के बाद वैश्वीकरण और नई विश्व व्यवस्था के दौर में भारत ने अमेरिका, रूस, फ्रांस, जापान तथा आसियान देशों के साथ रणनीतिक संबंधों को मजबूत किया। "लुक ईस्ट" और बाद में "एक्ट ईस्ट" नीति के माध्यम से भारत ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को सुदृढ़ किया। 21वीं सदी में "इंडो-पैसिफिक" क्षेत्र का महत्व बढ़ने के साथ भारत की विदेश नीति में समुद्री सुरक्षा और सामरिक साझेदारी को विशेष स्थान मिला। अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ QUAD जैसे मंचों पर सहयोग भारत की सुरक्षा और विदेश नीति के नए आयाम को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त BRICS, G20, SCO और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भूमिका यह स्पष्ट करती है कि भारत अपनी विदेश नीति को वैश्विक शक्ति संतुलन और राष्ट्रीय सुरक्षा के व्यापक दृष्टिकोण से देख रहा है। भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष "रणनीतिक स्वायत्तता" है। भारत ने किसी भी सैन्य गठबंधन का औपचारिक हिस्सा बनने के बजाय बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का समर्थन किया है। रूस से रक्षा सहयोग बनाए रखते हुए अमेरिका के साथ सामरिक साझेदारी विकसित करना भारत की संतुलित विदेश नीति का उदाहरण है। वर्तमान समय में भारत की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा तथा वैश्विक प्रभाव को सुदृढ़ करना है। कोविड-19 महामारी ने राष्ट्रीय सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणा को व्यापक रूप से बदल दिया। इससे यह स्पष्ट हो गया कि राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सैन्य शक्ति या सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य सुरक्षा, जैविक सुरक्षा तथा मानव सुरक्षा भी इसके महत्वपूर्ण आयाम हैं। कोविड-19 के दौरान संपूर्ण विश्व की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था प्रभावित हुई। भारत भी इस संकट से अछूता नहीं रहा। महामारी के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं पर अत्यधिक दबाव, लॉकडाउन के कारण आर्थिक गतिविधियों में गिरावट, बेरोजगारी, प्रवासी श्रमिकों की समस्या तथा आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान जैसी चुनौतियाँ सामने आईं। इस संकट ने यह स्पष्ट किया कि यदि स्वास्थ्य प्रणाली कमजोर हो तो राष्ट्रीय सुरक्षा भी प्रभावित हो सकती है। भारत ने कोविड-19 के दौरान बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य अवसंरचना का विस्तार किया, वैक्सीन उत्पादन को बढ़ावा दिया तथा डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं का विकास किया।

भारत की "वैक्सीन मैत्री" पहल ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की सकारात्मक छवि को मजबूत किया। भारत ने अनेक देशों को कोविड-19 वैक्सीन उपलब्ध कराकर यह सिद्ध किया कि मानव सुरक्षा और वैश्विक सहयोग आधुनिक राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्वपूर्ण तत्व हैं। महामारी ने जैविक सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, खाद्य सुरक्षा तथा डिजिटल नेटवर्क की सुरक्षा के महत्व को भी उजागर किया। कोविड-19 के दौरान साइबर अपराधों और डिजिटल जासूसी की घटनाओं में भी वृद्धि हुई, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि स्वास्थ्य संकट और साइबर सुरक्षा परस्पर जुड़े हुए हैं। महामारी के अनुभव ने भारत को स्वास्थ्य क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, अनुसंधान, जैव-प्रौद्योगिकी तथा आपदा प्रबंधन को राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का अभिन्न भाग

बनाने के लिए प्रेरित किया। 2014 के बाद भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देते हैं। इस अवधि में भारत की सुरक्षा नीति अधिक सक्रिय, आक्रामक तथा निर्णायक रूप में सामने आई है। आतंकवाद के प्रति कठोर नीति, सीमा सुरक्षा पर विशेष ध्यान, सैन्य आधुनिकीकरण तथा तकनीकी आत्मनिर्भरता इस दौर की प्रमुख विशेषताएँ रही हैं। 2014 के बाद भारत ने “जीरो टॉलरेंस टू टेररिज्म” की नीति अपनाई। उरी हमले के बाद सर्जिकल स्ट्राइक तथा पुलवामा हमले के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक यह दर्शाती हैं कि भारत अब केवल रक्षात्मक नीति तक सीमित नहीं है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर सीमापार कार्रवाई करने के लिए भी तैयार है। इस नीति ने यह संदेश दिया कि भारत अपनी संप्रभुता और सुरक्षा के प्रति किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेगा।

इस अवधि में सीमा अवसंरचना के विकास पर भी विशेष बल दिया गया। चीन और पाकिस्तान की सीमाओं पर सड़कों, पुलों, सुरंगों तथा सैन्य ठिकानों का निर्माण तेज किया गया। लद्दाख क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीन के साथ तनाव के बाद भारत ने सीमाई क्षेत्रों में सैन्य तैनाती और निगरानी को मजबूत किया। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए “आत्मनिर्भर भारत” और “मेक इन इंडिया” अभियान प्रारंभ किए गए। स्वदेशी हथियारों, मिसाइल प्रणालियों, लड़ाकू विमानों तथा रक्षा उपकरणों के निर्माण को प्रोत्साहन दिया गया। रक्षा खरीद नीति में सुधार कर निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाई गई। राष्ट्रीय सुरक्षा के संस्थागत ढाँचे को भी मजबूत किया गया। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का पद सृजित किया गया ताकि तीनों सेनाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित हो सके। थिएटर कमांड की दिशा में प्रयास प्रारंभ हुए तथा साइबर और अंतरिक्ष सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। 2019 में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने का निर्णय भी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना गया। सरकार का तर्क था कि इससे जम्मू-कश्मीर का बेहतर एकीकरण होगा और आतंकवाद तथा अलगाववाद पर नियंत्रण स्थापित किया जा सकेगा। हाल के वर्षों में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में समुद्री सुरक्षा, इंडो-पैसिफिक रणनीति, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष सुरक्षा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रक्षा तकनीकों को भी विशेष महत्व दिया गया है। भारत ने QUAD, I2U2 तथा अन्य सामरिक मंचों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया है। इसके बावजूद भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियाँ विद्यमान हैं। चीन के साथ सीमा विवाद आज भी भारत की सबसे बड़ी बाह्य सुरक्षा चुनौतियों में से एक है। गलवान घाटी जैसी घटनाओं ने यह स्पष्ट किया कि चीन की विस्तारवादी नीति भारत के लिए दीर्घकालिक चुनौती बनी हुई है। पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद और सीमा पार घुसपैठ भी निरंतर चिंता का विषय हैं। साइबर सुरक्षा आधुनिक युग की सबसे जटिल चुनौतियों में से एक है। सरकारी संस्थाओं, बैंकिंग नेटवर्क, ऊर्जा संयंत्रों तथा रक्षा प्रतिष्ठानों पर साइबर हमलों का खतरा लगातार बढ़ रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन तकनीक और सूचना युद्ध भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों को और अधिक जटिल बना रहे हैं। भारत की आंतरिक सुरक्षा भी अनेक समस्याओं से प्रभावित है। नक्सलवाद, धार्मिक कट्टरता, सांप्रदायिक तनाव, संगठित अपराध तथा सामाजिक असमानताएँ राष्ट्रीय स्थिरता के लिए चुनौती प्रस्तुत करती हैं। उत्तर-पूर्व भारत और जम्मू-कश्मीर में समय-समय पर उत्पन्न होने वाली अस्थिरता भी सुरक्षा नीति के लिए गंभीर विषय बनी रहती है। ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन भी आधुनिक राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्वपूर्ण आयाम बन चुके हैं। भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताएँ विदेशी आयातों पर निर्भर हैं, जिससे सामरिक जोखिम उत्पन्न होते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं, जल संकट तथा खाद्य असुरक्षा की समस्याएँ बढ़ रही हैं, जो दीर्घकाल में

राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर सकती हैं। समुद्री क्षेत्र में हिंद महासागर में चीन की बढ़ती उपस्थिति तथा सामरिक प्रतिस्पर्धा भारत के लिए चुनौती बन रही है। इसके अतिरिक्त जैविक खतरे, महामारी, अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा तथा वैश्विक आर्थिक अस्थिरता भी भारत की सुरक्षा नीति को प्रभावित कर रही हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति निरंतर परिवर्तनशील और बहुआयामी रही है। वर्तमान समय में भारत को पारंपरिक सैन्य चुनौतियों के साथ-साथ साइबर युद्ध, जैविक संकट, समुद्री प्रतिस्पर्धा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा जलवायु परिवर्तन जैसी नई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। इसलिए भविष्य की सुरक्षा नीति को अधिक समन्वित, तकनीकी रूप से उन्नत, आत्मनिर्भर तथा वैश्विक सहयोग पर आधारित बनाना आवश्यक होगा।

1.1 शोध की आवश्यकता— भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का अध्ययन वर्तमान वैश्विक और राष्ट्रीय परिस्थितियों में अत्यंत आवश्यक हो गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत ने अनेक प्रकार की सुरक्षा चुनौतियों का सामना किया है, जिनमें बाह्य आक्रमण, सीमाई विवाद, आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद, साइबर हमले, समुद्री सुरक्षा संकट तथा जैविक खतरों जैसी समस्याएँ प्रमुख हैं। 1947 से 2023 तक भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में निरंतर परिवर्तन और विकास हुआ है। प्रारंभिक काल में जहां सुरक्षा नीति आदर्शवाद और गुटनिरपेक्षता पर आधारित थी, वहीं वर्तमान समय में यह बहुआयामी, तकनीक-आधारित तथा रणनीतिक स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। बदलती वैश्विक राजनीति, चीन की विस्तारवादी नीति, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा तथा साइबर युद्ध जैसी चुनौतियों ने भारत की सुरक्षा नीति को और अधिक जटिल बना दिया है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्वरूप तथा भविष्य की चुनौतियों का समग्र अध्ययन किया जाए, ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा की दिशा में प्रभावी नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

1.2 समस्या का स्वरूप एवं व्याख्या— राष्ट्रीय सुरक्षा नीति से संबंधित प्रमुख समस्या यह है कि भारत को एक साथ पारंपरिक तथा गैर-पारंपरिक दोनों प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों से सीमाई विवाद तथा आतंकवाद की समस्या बनी हुई है, वहीं दूसरी ओर साइबर सुरक्षा, जैविक महामारी, ड्रोन युद्ध, सूचना युद्ध तथा जलवायु परिवर्तन जैसी नई चुनौतियाँ उभर रही हैं। भारत की विशाल जनसंख्या, भौगोलिक विविधता, सामाजिक विषमताएँ तथा आर्थिक असमानताएँ भी राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त आंतरिक सुरक्षा की समस्याएँ जैसे नक्सलवाद, अलगाववाद, सांप्रदायिक तनाव तथा संगठित अपराध भी राष्ट्रीय स्थिरता के लिए गंभीर चुनौती हैं। समस्या का मूल स्वरूप यह है कि भारत की सुरक्षा नीति को पारंपरिक सैन्य दृष्टिकोण से आगे बढ़ाकर समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा के अनुरूप विकसित करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या भारत की सुरक्षा संस्थाएँ और नीतियाँ आधुनिक तकनीकी एवं वैश्विक चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम हैं।

1.3 अध्ययन का औचित्य— इस अध्ययन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी राष्ट्र के अस्तित्व, विकास और स्थिरता का आधार होती है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है और उसकी सुरक्षा केवल उसके लिए ही नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया तथा वैश्विक राजनीति के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यह देश

की विदेश नीति, आर्थिक विकास, सामाजिक स्थिरता तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। वर्तमान समय में भारत एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को सुदृढ़ कर रहा है। ऐसे में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि स्वतंत्रता के बाद से भारत की सुरक्षा नीति में किस प्रकार परिवर्तन हुआ, किन परिस्थितियों ने इसे प्रभावित किया तथा भविष्य में इसे किस दिशा में विकसित किया जाना चाहिए। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शोधार्थियों, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि इसके माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा के बहुआयामी स्वरूप को समझने में सहायता मिलेगी।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य— इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के विकास और स्वरूप का विश्लेषण करना है। अध्ययन का उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से 2023 तक भारत की सुरक्षा नीति में आए परिवर्तनों का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत भारत-चीन युद्ध, भारत-पाक युद्ध, परमाणु नीति, आतंकवाद, साइबर सुरक्षा तथा समुद्री सुरक्षा जैसी घटनाओं और मुद्दों का मूल्यांकन किया जाएगा। अध्ययन का उद्देश्य यह भी है कि भारत की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा चुनौतियों का विश्लेषण किया जाए तथा यह समझा जाए कि भारत ने इन चुनौतियों से निपटने के लिए कौन-कौन सी नीतियाँ अपनाईं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद, राष्ट्रीय जांच एजेंसी, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ तथा अन्य संस्थागत व्यवस्थाओं की भूमिका का अध्ययन भी इस शोध का उद्देश्य है। अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों के संदर्भ में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना भी है।

1.5 शोध-प्रश्न— प्रस्तुत अध्ययन में कई महत्वपूर्ण शोध-प्रश्नों को केंद्र में रखा गया है। प्रमुख प्रश्न यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का विकास किन परिस्थितियों और घटनाओं के प्रभाव में हुआ। दूसरा प्रश्न यह है कि भारत-चीन युद्ध, भारत-पाक युद्धों तथा परमाणु नीति ने भारत की सुरक्षा रणनीति को किस प्रकार प्रभावित किया। तीसरा प्रश्न यह है कि आतंकवाद, नक्सलवाद, साइबर हमले तथा समुद्री चुनौतियों जैसी आधुनिक समस्याओं के प्रति भारत की सुरक्षा नीति कितनी प्रभावी रही है। एक अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या भारत की वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा नीति आधुनिक तकनीकी और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त यह भी शोध का विषय है कि राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति के मध्य किस प्रकार का संबंध है तथा भारत ने अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को किस प्रकार बनाए रखा है। अंततः यह अध्ययन इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि भविष्य में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति को अधिक प्रभावी बनाने के लिए किन सुधारों और नीतिगत उपायों की आवश्यकता है।

1.6 अध्ययन की परिधि एवं सीमाएँ— अध्ययन की परिधि 1947 से 2023 तक भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के ऐतिहासिक विकास, स्वरूप तथा चुनौतियों तक सीमित है। इसमें भारत की बाह्य सुरक्षा, आंतरिक सुरक्षा, परमाणु नीति, आतंकवाद-रोधी नीति, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा तथा अंतरिक्ष सुरक्षा जैसे प्रमुख आयामों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित प्रमुख युद्धों, घटनाओं तथा संस्थागत व्यवस्थाओं का विश्लेषण भी सम्मिलित किया गया है। हालांकि यह अध्ययन अत्यंत व्यापक विषय से संबंधित है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा एक बहुआयामी और निरंतर विकसित होने वाली अवधारणा है, इसलिए इसके सभी पहलुओं का पूर्ण विश्लेषण एक ही अध्ययन में संभव नहीं है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोधपत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा आधिकारिक दस्तावेजों पर आधारित है। कई

सामरिक और सुरक्षा संबंधी सूचनाएँ गोपनीय होती हैं, जिसके कारण कुछ तथ्यों तक प्रत्यक्ष पहुँच संभव नहीं हो पाती। इसके अतिरिक्त बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों और तकनीकी परिवर्तनों के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियाँ निरंतर परिवर्तित होती रहती हैं, जिससे भविष्य के संदर्भ में निश्चित निष्कर्ष निकालना कठिन हो जाता है। फिर भी यह अध्ययन भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के समग्र स्वरूप को समझने और उसका विश्लेषण करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

1.7 परिकल्पना— प्रस्तुत अध्ययन इस परिकल्पना पर आधारित है कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति 1947 से 2023 तक निरंतर परिवर्तनशील और बहुआयामी रही है, जिसका विकास बदलती राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के प्रभाव में हुआ है। यह भी परिकल्पित किया गया है कि प्रारंभिक वर्षों में भारत की सुरक्षा नीति आदर्शवाद, गुटनिरपेक्षता तथा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व पर आधारित थी, किन्तु समय के साथ यह अधिक यथार्थवादी, सामरिक तथा तकनीकी स्वरूप ग्रहण करती गई। अध्ययन यह भी मानकर चलता है कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें आर्थिक, साइबर, समुद्री, जैविक तथा मानव सुरक्षा जैसे आयाम भी सम्मिलित हो चुके हैं। एक अन्य परिकल्पना यह है कि चीन और पाकिस्तान से उत्पन्न चुनौतियों, आतंकवाद, साइबर युद्ध तथा वैश्विक शक्ति-संतुलन में परिवर्तनों ने भारत की सुरक्षा नीति को अधिक आक्रामक और सक्रिय बनाया है। अध्ययन यह भी मानता है कि आत्मनिर्भरता, तकनीकी विकास तथा संस्थागत समन्वय भारत की भविष्य की सुरक्षा नीति के महत्वपूर्ण आधार बनते जा रहे हैं।

1.8 शोध प्राविधि— इस शोध में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक तथा वर्णनात्मक शोध प्राविधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन का स्वरूप गुणात्मक है, जिसमें भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के विकास, संरचना तथा चुनौतियों का गहन विश्लेषण किया गया है। ऐतिहासिक पद्धति के माध्यम से 1947 से 2023 तक की प्रमुख घटनाओं, युद्धों तथा नीतिगत परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है। विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा के विभिन्न आयामों जैसे बाह्य सुरक्षा, आंतरिक सुरक्षा, आतंकवाद, परमाणु नीति तथा साइबर सुरक्षा का मूल्यांकन किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित संस्थाओं, रणनीतियों तथा समकालीन चुनौतियों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टिकोण का भी उपयोग किया गया है, जिससे विभिन्न कालखंडों की सुरक्षा नीतियों के बीच अंतर और विकास को समझा जा सके।

1.9 तथ्य-संकलन के स्रोत— तथ्य-संकलन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन हेतु पुस्तकों, शोधपत्रों, सरकारी रिपोर्टों, रक्षा मंत्रालय तथा गृह मंत्रालय के वार्षिक प्रतिवेदनों, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद से संबंधित दस्तावेजों, नीति आयोग की रिपोर्टों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, शोध जर्नलों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत-चीन युद्ध, भारत-पाक युद्ध, कारगिल युद्ध, आतंकवाद, परमाणु नीति तथा साइबर सुरक्षा से संबंधित आधिकारिक दस्तावेजों और विशेषज्ञों के विचारों का भी उपयोग किया गया है। तथ्य-संकलन में अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टें तथा समकालीन सुरक्षा विश्लेषणों को भी सम्मिलित किया गया है, ताकि अध्ययन अधिक वस्तुनिष्ठ और प्रामाणिक बन सके।

1.10 साहित्य समीक्षा— राष्ट्रीय सुरक्षा नीति पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन यह दर्शाता है कि इस विषय पर अनेक विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से शोध कार्य किया है। K- Subrahmanyam ने भारत की सुरक्षा नीति और सामरिक दृष्टिकोण का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। Stephen P- Cohen ने भारत की उभरती हुई शक्ति के रूप में भूमिका और उसकी सैन्य क्षमता का अध्ययन किया है। Sumit Ganguly ने भारत-पाक संबंधों तथा दक्षिण एशिया की सुरक्षा समस्याओं पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं। Ashley J- Tellis ने भारत की परमाणु नीति और सामरिक प्रतिरोध क्षमता का विश्लेषण किया है। Harsh V- Pant ने भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति के परस्पर संबंधों का अध्ययन किया है। भारतीय विद्वानों द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद, साइबर सुरक्षा तथा समुद्री सुरक्षा पर अनेक शोध कार्य किए गए हैं, किन्तु 1947 से 2023 तक भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का समग्र और बहुआयामी अध्ययन अपेक्षाकृत कम देखने को मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी कमी को पूरा करने का प्रयास करता है।

1.11 डेटा विश्लेषण — डेटा विश्लेषण के अंतर्गत अध्ययन में प्राप्त तथ्यों और सूचनाओं का व्यवस्थित एवं तार्किक विश्लेषण किया गया है। ऐतिहासिक घटनाओं, युद्धों तथा नीतिगत निर्णयों के आधार पर यह स्पष्ट किया गया है कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति समय के साथ किस प्रकार परिवर्तित हुई। विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि प्रारंभिक वर्षों में भारत की सुरक्षा नीति अधिक आदर्शवादी थी, किन्तु 1962 के युद्ध के बाद उसमें यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रमुख हो गया। 1971 के युद्ध और परमाणु नीति ने भारत की सामरिक स्थिति को मजबूत किया। 21वीं सदी में आतंकवाद, साइबर सुरक्षा तथा समुद्री चुनौतियों ने राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा को व्यापक बना दिया। अध्ययन में यह भी विश्लेषित किया गया है कि भारत ने संस्थागत सुधारों, रक्षा आधुनिकीकरण तथा तकनीकी आत्मनिर्भरता के माध्यम से अपनी सुरक्षा क्षमता को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है।

1.12 चर्चा— अध्ययन की चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति निरंतर विकासशील और बहुआयामी रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भारत ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, किन्तु अनेक चुनौतियाँ आज भी विद्यमान हैं। चीन की विस्तारवादी नीति, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, साइबर हमले तथा समुद्री प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याएँ भारत की सुरक्षा नीति को निरंतर प्रभावित कर रही हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि आधुनिक समय में राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि आर्थिक विकास, तकनीकी आत्मनिर्भरता, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा वैश्विक कूटनीतिक संतुलन भी इसके महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। भारत ने अपनी सुरक्षा नीति को अधिक सक्रिय और तकनीकी रूप से उन्नत बनाने का प्रयास किया है, किन्तु भविष्य की चुनौतियों के लिए और अधिक समन्वित तथा दीर्घकालिक रणनीति की आवश्यकता बनी हुई है।

1.13 परिणाम— अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति ने स्वतंत्रता के बाद से लंबी और महत्वपूर्ण यात्रा तय की है। प्रारंभिक आदर्शवादी दृष्टिकोण से लेकर आधुनिक यथार्थवादी और बहुआयामी सुरक्षा नीति तक भारत ने बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने का प्रयास किया है। भारत की सैन्य क्षमता, परमाणु शक्ति, समुद्री सुरक्षा तथा साइबर क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद, राष्ट्रीय जांच एजेंसी तथा चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जैसी संस्थागत व्यवस्थाओं ने सुरक्षा समन्वय को मजबूत किया है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि भारत की सुरक्षा नीति अब केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक, तकनीकी और मानवीय सुरक्षा को भी

समान महत्व देती है। इसके बावजूद सीमाई विवाद, आतंकवाद, साइबर खतरे तथा वैश्विक शक्ति-संतुलन में परिवर्तन भविष्य की प्रमुख चुनौतियाँ बने हुए हैं।

अनुशंसाएं— भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण अनुशंसाएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं। पहली, राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का स्पष्ट और समग्र दस्तावेज तैयार किया जाना चाहिए, जिससे सभी सुरक्षा संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित हो सके। दूसरी, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को और अधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि विदेशी निर्भरता कम हो सके। तीसरी, साइबर सुरक्षा अवसंरचना को अत्याधुनिक तकनीक से सुदृढ़ किया जाना आवश्यक है। चौथी, सीमाई क्षेत्रों में सड़क, संचार और सैन्य अवसंरचना का तीव्र विकास किया जाना चाहिए। पाँचवीं, आतंकवाद और उग्रवाद से निपटने के लिए खुफिया तंत्र को अधिक आधुनिक और समन्वित बनाया जाना चाहिए। छठी, समुद्री सुरक्षा और हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की सामरिक उपस्थिति को और अधिक मजबूत किया जाना चाहिए। सातवीं, अंतरिक्ष सुरक्षा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रक्षा प्रणालियों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। आठवीं, राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित संस्थाओं के मध्य समन्वय और सूचना साझा करने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। नौवीं, युवाओं में राष्ट्रीय सुरक्षा और साइबर जागरूकता से संबंधित शिक्षा का विस्तार किया जाना चाहिए। दसवीं, स्वास्थ्य सुरक्षा और जैविक संकटों से निपटने के लिए मजबूत सार्वजनिक स्वास्थ्य ढाँचा विकसित किया जाना चाहिए। ग्यारहवीं, राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा जैसे गैर-पारंपरिक खतरों को भी पर्याप्त महत्व दिया जाना चाहिए। बारहवीं, पड़ोसी देशों के साथ संतुलित और व्यावहारिक कूटनीतिक संबंध विकसित किए जाने चाहिए, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा मिल सके। तेरहवीं, रक्षा अनुसंधान, स्वदेशी तकनीक और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों और उद्योगों के बीच सहयोग को मजबूत किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष— 1947 से 2023 तक भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति ने लंबी यात्रा तय की है। प्रारंभिक आदर्शवादी दृष्टिकोण से लेकर आधुनिक यथार्थवादी एवं बहुआयामी सुरक्षा अवधारणा तक भारत की नीति निरंतर विकसित हुई है। आज भारत केवल सैन्य शक्ति के आधार पर नहीं, बल्कि आर्थिक विकास, तकनीकी आत्मनिर्भरता, कूटनीतिक सक्रियता तथा सामरिक क्षमता के आधार पर भी वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है। भारत की सुरक्षा नीति का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय अखंडता, संप्रभुता तथा नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक दोनों प्रकार की चुनौतियों के लिए तैयार रहना होगा। भविष्य में एक समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति, आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन, साइबर क्षमता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सुरक्षा प्रणाली तथा मजबूत कूटनीतिक सहयोग भारत की सुरक्षा नीति को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

संदर्भ सूची—

1. Appadorai, A. *Domestic Roots of India's Foreign Policy*, Oxford University Press, 1981. ISBN: 9780195612513
2. Bajpai, Kanti. *India's National Security*, Oxford University Press, 2002. ISBN: 9780195658375
3. Cohen, Stephen P. *India: Emerging Power*, Brookings Institution Press, 2001. ISBN: 9780815704017
4. Dixit, J.N. *India's Foreign Policy and Its Neighbours*, Gyan Publishing House, 2001. ISBN: 9788121207260

RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
 Volume 01, Issue 02, December 2025

5. Subrahmanyam, K. *India's Security Perspectives*, ABC Publishing, 1998.
6. Tellis, Ashley J. *India's Emerging Nuclear Posture*, RAND Corporation, 2001. ISBN: 9780833028010
7. Ganguly, Sumit. *Conflict Unending: India-Pakistan Tensions*, Columbia University Press, 2001. ISBN: 9780231125267
8. Muni, S.D. *India and South Asia*, Har-Anand Publications, 1993. ISBN: 9788124104375
9. Raja Mohan, C. *Crossing the Rubicon*, Penguin India, 2003. ISBN: 9780143028663
10. Singh, Jasjit. *Kargil 1999: Pakistan's Fourth War for Kashmir*, Knowledge World, 1999. ISBN: 9788185971459
11. Pant, Harsh V. *Indian Foreign Policy*, Oxford University Press, 2016. ISBN: 9780199453822
12. Basrur, Rajesh. *Minimum Deterrence and India's Nuclear Security*, Stanford University Press, 2006. ISBN: 9780804751138
13. Chari, P.R. *Nuclear Crisis, Escalation Control and Deterrence in South Asia*, Routledge, 2003. ISBN: 9780415324042
14. Ministry of Defence, Government of India, Annual Reports (Various Years).
15. Ministry of Home Affairs, Government of India, Internal Security Reports.
16. National Security Strategy Discussions, Government of India.
17. भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति.
18. National Security Strategy, India.